लाइफसेल की बीएएमएएस तकनीक अगले माह से शुरू

स्टेमसेल थैरेपी से असाध्य रोगों के इलाज में मदद मिलेगी

मनोज अपरेजा | चंडीगढ़

जिन लोगों के स्टेम सेल पहले नहीं लिए जा सके। उन्हें अगर कोई बीमारी हो जाती है, तो उनके लिए अच्छी खबर है। लाइफ सेल अगली पीढ़ी के स्टेम सेल प्रौद्योगिकी के तहत बोन मैरो एस्पेरेट कंसेंट्रेट सिस्टम यानी बीएएमएएस की सुविधा अगले वर्ष जनवरी से देशभर में शुरू करने जा रहा है। इसके लिए कंपनी ने हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी के साथ समझौता किया है। इसके तहत भारत में लिम्ब एसेमिया के लिए अत्याधुनिक ट्रायल कर लिया है। इस अंतरराष्ट्रीय मानको की नई उच्च स्टेमसेल थैरेपी से असाध्य रोगों के इलाज में मदद मिलेगी। इस सिस्टम के प्रत्यारोपण से रक्त की गति बढ़ जाती है। दर्द की कमी हो जाती है और घाव शीघ्र भर जाता है।

बीएएमएएस एक जैविक प्रौद्योगिकी है, जो सीई और यूएसएफडीए से प्रमाणित है। यह सिस्टम के तहत मात्र 15 मिनट में ही बोन मैरो स्टेम सेल और प्लाज्मा निकाल लिए जाते हैं। इन्हें शरीर के उन अंगों पर इंजेक्ट किया जाता है, जहां पर कोई बीमारी होती है। इसके जरिए वैस्कूलर डिजीज और गैंगरीन जैसी घातक बीमारियों का इलाज भी संभव है। लाइफ सेल रीजनल मैनेजर दिलीप तिवारी ने बताया कि अभी तक गैंगरीन से प्रभावित पैर पर प्लाज्मा के जरिए थैरेपी की जाती है, जिससे गैंगरीन जैसी बीमारी पर भी काबू पाया जा सकता है। अभी तक चोट लगने पर गैंगरीन होने पर प्रभावित अंग को काटना पड़ता था। लेकिन इसके जरिए अब अंग काटना नहीं पड़ेगा। तिवारी ने बताया कि इससे संबंधित सभी प्रयोग कर लिए गए हैं।